राष्ट्रीय आन्दोलन का सहयात्री हिन्दी सिनेमा : एक ऐतिहासिक विश्लेषण

डॉ. नीलांजना त्रिपाठी

19वीं शताब्दी के अंतिम दशक में एक नये सशक्त संचार के माध्यम के रूप में 'सिनेमा' का उदय हुआ जिसमें जनमानस को चमत्कृत करने की अद्‌भूत और जादूई क्षमता विद्यमान थी। इस क्षमता का सकारात्मक उपयोग भी आरंभिक दौर में राष्ट्रीय चेतना से लैस और प्रतिबद्ध फिल्मकारों ने किया। निष्कर्षतः सांस्कृतिक पुर्नजागरण की पूर्ववर्ती चेतना उतरोत्तर राष्ट्रीय आन्दोलन में परिणत होती गयी और भारतीय सिनेमा में इसकी प्रतिछाया निखार पाने लगी।

धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं पौराणिक इतिवृतात्मक कथानकों के माध्यम से राष्ट्रीय आन्दोलन की अनुगूंज मूक युग से ही राष्ट्रीय चेतना को बहुआयामी विस्तार और चिन्तन की दिशा देने में फिल्मकारों को जुटे देखा जा सकता है। वस्तुतः सिनेमा और राष्ट्रीय आन्दोलन का उद्‌भव या अंकुरण समकालीन है। दोनों का समानांतर विकास और विस्तार ऐतिहासिक महत्व की घटनायें है। ''इतिहास के इस कालखण्ड में दोनों कभी कंधे से कंधा मिलाते हुए, कभी एक दूसरे से दूर भागते हुए तो कभी एक–दूसरे के पूरक दिखते है।''